मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक-03-9-2022 दिन- शनिवार

5101

सैर करने जाएँगे

सैर करने जाएँगे,
तारों से मिलने जाएँगे।
चन्दा से मिलने जाएँगे,
बादल पे बैठके जाएँगे।।

रास्ते-रास्ते जाएँगे,
जंगल-जंगल जाएँगे।
समन्दर ऊपर जाएँगे,
कितने मजे आएँगे?

घूम-घूम जब थक जाएँगे,
बादल पर ही सो जाएँगे।
इन्द्रधनुषी परियाँ होंगी,
उनके साथ ही उठ जाएँगे।।

बादल दादा इक दिन बरसेगें,
ऐसे में हम फिर कहाँ रहेगें?
परियों के साथ उड़-उड़कर,
उनके साथ ही उड़ जाएँगे।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी
जवाँ, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03.09.2022 दिन- शनिवार

5102

तुकान्त शब्द कविता

चँगू-मँगू थे दो भाई,
खेल रहे पकड़म-पकड़ाई।
बिल्ली मौसी घात लगाये,
रहा न जाये, जी ललचाये।।

चूहा बिल्ली की कहानी

चँगू मोटा ताजा था,
खूब खाना खाता था।
मँगू दुबला-पतला था,
मानो चाँद का टुकड़ा था।।

सोचे, चँगू या मँगू खाऊँ?
भूख को अब मैं रोक न पाऊँ।
मौसी बोली, एक बात बताऊँ,
तुमको मैं नये खेल सिखाऊँ।।

चँगू-मँगू सुन ये घबराते,
सरपट-सरपट दौड़ लगाते।
बिल्ली मौसी के हाथ न आते,
अपनी-अपनी जान बचाते।।

स्वाती सिंह (स०अ०)
प्रा० वि०- रवांसी
परसेण्डी, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03-09-2022 दिन- शनिवार

5103

5 सितम्बर (शिक्षक दिवस)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन,
जन्मे पाँच सितम्बर को।
कहलाते बच्चों के गुरु हैं,
इनका छूता यश अम्बर को।।

बने राष्ट्रपति, देश मनाता,
शिक्षक दिवस मने हर ओर।
शिक्षकों के सम्मान की खातिर,
होते कार्यक्रम हैं चहुँ ओर।।

खुली प्रकृति में शिक्षित कीजे,
ज्ञान प्रकृति का अपरम्पार।
करवाओ परिचय तुम इनका,
बच्चे प्रकृति का हैं उपहार।।

कहते हैं ये राधाकृष्णन,
इनकी सीख महान है।
दीपशिखा-सा जले नित्य,
गुरु, जग करता गुणगान है।।

रचना-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी,
मऊरानीपुर (झाँसी)

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03/09/2022 दिन- शनिवार

5104

शिक्षक दिवस

शिक्षक प्रणेता शिक्षा का ,
अधिष्ठाता ज्ञान का।
अशिक्षा से बढ़ जाता है,
अभिमान इन्सान का।।

युग प्रवर्तक, बुद्धिदाता,
अज्ञान विनाशक गुरु है।
इसकी महिमा से ही,
ज्ञान का प्रकाश शुरू है।।

भारत विश्व गुरु है,
गुरु की महिमा जाने।
गुरु के महत्व को यहाँ,
हम सब हैं पहचाने।।

राधाकृष्णन का जब होता जन्मदिवस,
भारत में उसी दिन मानते शिक्षक दिवस।
शिक्षक दिवस के रूप में हम प्रकट करें आभार ,
धन्यवाद दे गुरुओं का जिनकी महिमा अपरम्पार।।

रचना -
चंचल उपाध्याय (प्र०अ०)
प्रा० वि० कोट,
बिसौली, बदायूँ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03.09.2022 दिन- शनिवार

5105

निपुण भारत मिशन

बुनियादी शिक्षा को बेहतर बनाने,
नयी शिक्षा नीति का क्रियान्वयन कराने।
भाषा और गणित में नयी दक्षता लाने,
निपुण भारत मिशन योजना आयी है।।

चहक कार्यक्रम ने नयी गतिविधियों से,
देखो विद्यालयों में धूम मचायी है।
नयी गतिविधियाँ, रोचक सामग्री लेकर,
प्री स्कूल में बाल वाटिका आयी है।।

हो बच्चों में पढ़ने और लिखने का,
बुनियादी भाषा और कौशल का ज्ञान।
अंकगणित की बुनियादी समझ का,
सब बच्चों में हो पूर्ण ज्ञान।।

निपुण लक्ष्य हो हासिल सबको,
आधारभूत साक्षरता की अलख जगायी है।
समग्र शिक्षा अभियान को लेकर,
निपुण भारत मिशन योजना आयी है।।

रचना
रविन्द्र कुमार सिरोही (स0अ0)
प्रा0 वि0 सूप-2
छपरौली, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05.09.2022 दिन- सोमवार

5106

हे शिक्षक! तुम्हें प्रणाम....

अक्षर-अक्षर का बोध कराते,
नये ज्ञान का दीप जलाते।
सदा सही पथ हो बतलाते,
शिक्षित, ज्ञानी, विद्वान बनाते।।

दिशा बोध जो प्रतिदिन देते,
सहज-सरल निर्देशन देते।
उससे मन का तम है मिटता,
अन्तर स्वर्णिम भाव चमकता।।

ज्ञान पन्थ के तुम निर्माता,
हर कोई कहता है, बतलाता।
हे! मानवता उपवन के माली!
गरिमा तुम्हारी जग में आली।।

हे शिक्षक! धन्य तुम्हारा काम,
स्वीकारो मेरा श्रद्धायुक्त प्रणाम।
भर दो दिशा-दिशा उजियारा,
बहे ज्ञान की अभिनव धारा।।

रचना
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
क० उ० वि० अकबापुर
पहला, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09 /2022 दिन- सोमवार

5107

ऐसा गुरु स्वीकार मुझे (भाग-1)

नैतिकता का पाठ पढ़ा दें,
ऐसा गुरु स्वीकार मुझे।
इस पुण्य धरा को स्वर्ग बना दे,
ऐसा गुरु अंगीकार मुझे।।

राग-द्वेष को दूर मिटा दे,
अहंकार से मुक्त करा दे।
मानव को मानवता सिखलाये,
वह परम गुरु स्वीकार मुझे।।

पत्थर से जो देव बनाये,
अधर्म, अन्याय को दूर करे।
लव-कुश, शिवा, प्रताप बनें सब,
सिंह, शावकों के दाँत गिने।।

कलियुग को सतयुग में बदले,
राम, कृष्ण तैयार करे।
गीता का जो ज्ञान कराये,
ऐसा गुरु स्वीकार मुझे।।

रचना-:
माधवसिंह नेगी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० जैली,
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09/2022 दिन- सोमवार

5108

पतंग एक सीख

एक पतंग जो रंग-बिरंगी,
थोड़ी-थोड़ी सी अतरंगी।
आसमान में इठलाकर,
लहराकरऔर बलखाकर।।

लम्बी ऊँची डोर के संग,
भर-भरकर मन में तरंग।
आकाश को छूने चली,
सूर्य से मिलने चली।।

तेज हवा का झोंका आया,
खींची गयी फिर पतंग की डोर।
जो, जा रही थी सूर्य से मिलने,
अब आ गयी धरती की ओर।।

ऊँचा उड़ना कब किसी का,
दुनिया में किसी को भाया है।
कदम-कदम पर विघ्न डालकर,
उड़ते हुए पर अंकुश लगाया है।।

रचना
सबा परवीन (स०अ०)
क० वि० चितमाना शेरपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09/2022 दिन- सोमवार

5109

'अ' से अनार खट्टा-मीठा,
'आ' से आम होता मीठा।
'इ' से इमली बहुत ही खट्टी,
'ई' से ईख शहद सी मीठी ।।

'उ' से उल्लू रात में जागता,
'ऊ' से ऊन से स्वेटर बनता।
'ऋ' से ऋषि तप है करते,
'ए' से एड़ी से हम चलते।।

'ऐ' से ऐरावत हाथी का नाम,
'ओ' से ओखली कूटे धान।
'औ' से औरत सजती-सँवरती,
'अं' से अंगूर की बेल ऊपर चढ़ती।।

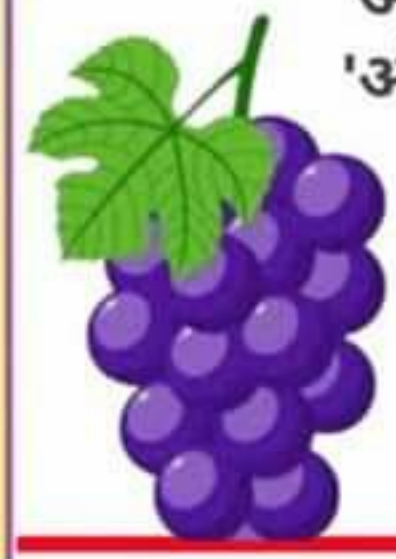

'अः' के (:) विसर्ग होते हैं न्यारे,
आओ! इनको याद करें।
सब पढ़ें और सब बढ़ें,
मिल-जुलकर हम आगे बढ़ें।।

रचना- उमा ठाकुर (इ०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा, मथुरा

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

5110

दिनांक- 05/09/2022 दिन- सोमवार

शिक्षक दिवस

शिक्षक ही देता विद्या दान,
शिक्षक से ही है हमारी पहचान।
शिक्षक बढ़ाता हमारा ज्ञान,
सम्मानित करता पूरा जहान।।

मूल आदर्शों का पाठ पढ़ाता,
जीवन जीने का तरीका बताता।
विद्यार्थियों का भविष्य बनाता,
शिक्षक सबको संस्कार सिखाता।।

सदा करो शिक्षक का सम्मान,
उन्हीं से है तुम्हारी पहचान।
पाठ सीख कर अमल करो,
और जीवन में आगे बढ़ो।।

हाथ जोड़ हम इस जगत के,
प्रत्येक गुरुवर को शीश झुकाते हैं।
शिक्षक दिवस पर आओ मिलकर,
शिक्षक का मान बढ़ाते हैं।।

रचना
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० निवाड़ा
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05-09-2022 दिन- सोमवार

5111

नटखट गोपाल

गलिन-गलिन में ढूँढती,
मैं वाकूँ चहुँ ओर।
दधि-माखन कौ चोर है,
सखि मेरौ चितचोर।।

सुधि-बुधि अपनी खोय के,
मैं घूमूँ बेहाल।
जब ते मन मैं बसि गयौ,
वो नटखट गोपाल।।

जब ते उलझे हैं सखी,
वा कान्हा ते नैन।
नींद न आवै रात-दिन,
जियरा है बेचैन।।

मोर मुकुट सोहे बहुत,
गल वैजंती माल।
ब्रज में मुरलीधर सखी,
करतौ फिरे धमाल।।

वानै कंकर मारि कै,
मटकी दीनी फोरि।
अरु फिर बरजोरी करी,
दई कलाई मोरि।।

रचना
प्रदीप कुमार चौहान (प्र०अ०)
प्रा० वि० कलाई
धनीपुर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09/2022 दिन-सोमवार

5112

शिक्षक दिवस

गुरु ज्ञान की दीपक ज्योति,
मन का ये अँधियारा हरती।
पूरा ज्ञान न पुस्तक दे पाए,
गुरु ही पुस्तक का सार बताए।।

वीरान सी इस दुनिया में,
गुरुवर आशा के दीप जलाते।
चंचल मन को तब मेरे,
संयम अनुशासन सिखलाते।।

देकर निधि शिक्षा की,
दुनिया की सैर कराएँ।
मानवता के गुण भरकर,
हमको इंसान बनाएँ।।

प्रतिभा संसाधन मिलकर,
गुरु के साये में पलता है।
माटी का घट जब पकता है,
स्वप्निल भारत तब बनता है।।

रचना

शैल चौधरी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय परासी द्वितीय
म्योरपुर, सोनभद्र

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09/2022 दिन- सोमवार

5113

गुरु हैं भगवान

विद्यालय तो है मन्दिर,
गुरु तो हैं भगवान।
इनके आगे सदा झुकेगा सिर,
हम करते इनको प्रणाम।।

हम शिष्य तुम शिक्षक हो,
हम पढ़ते हैं तुम पढ़ाते हो।
तुम ही तो ज्ञानदाता हो,
तुम ही तो विधाता हो।।

शिक्षा बहुत जरूरी है,
इसके बिना जिन्दगी अधूरी है।
गुरु नहीं तो ना मिलेगा ज्ञान,
सदा ही करना इनको प्रणाम।।

शिक्षक तो देते हैं ज्ञान,
जिनका सदा करना सम्मान।
इसीलिए तो कहते हैं,
शिक्षक होते हैं भगवान।।

रचना
रोली शर्मा (पूर्व छात्रा)
प्रा० वि० डेरवाँखुर्द
चहनियाँ, चन्दौली

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05-09-2022 दिन- सोमवार

5114

एक हमारा हिन्दुस्तान

जहाँ शंख ध्वनि गुंजित होती,
और गुरुद्वारा दे गुरुवाणी ज्ञान।
गिरिजाघर कर रहे प्रार्थना,
सुबह जगाती हमें अजान।।

इस धरती पर जान न्योछावर,
सर आँखों पर इसकी शान।
भिन्न-भिन्न है पंथ किन्तु है,
एक हमारा हिन्दुस्तान।।

सब जन में बसता रक्त है जो,
वो इस धरती का रक्त महान।
हम रक्त के हर एक कतरे को,
तैयार हैं करने को कुर्बान।।

रचना
स्वीटी जॉन (स०अ०)
संविलयित विद्यालय रेहुआ
फूलबेहड़, लखीमपुर खीरी

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 05/09/2022 दिन- सोमवार

5115

शिक्षक

शिक्षक होते बड़े महान,
देते हमको दिव्य ज्ञान।
जीवन का सारा तम हर कर,
बनाते हमारा व्यक्तित्व महान।।

शिक्षक जीवन की राह दिखाते,
भले-बुरे की पहचान कराते।
नैतिकता का पाठ पढ़ा कर,
हर मुश्किल से हमें बचाते।।

मन से हमारे अज्ञान मिटाकर,
दिव्य ज्ञान की ज्योत जलाते।
उनके बताए राह पर चलकर,
हम जीवन में सफलता पाते।।

इस धरती पर हम ईश्वर को,
शिक्षक के रूप में पाते हैं।
शिक्षक होते बड़े महान,
हम नित नित शीश झुकाते हैं।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5116

दिनांक- 06.09.2022 दिन- मंगलवार

गुरू

शिक्षा का जो देकर दान,
शिष्यों को जो गढ़ें महान।
रचता रोज नये इतिहास,
गुरु ही होता वो इन्सान।।

गुरु माना जाता भगवान,
पूजा जाता ईश समान।
करके नित नूतन प्रयास,
देता शिक्षा का वरदान।।

गुरु होता गुणों की खान,
दूर करे भ्रम और अज्ञान।
जीत के शिष्यों का विश्वास,
भरता पंखों में नई उड़ान।।

हर मुश्किल का कर निदान,
देता शिष्यों को नित ज्ञान।
लक्ष्य के ले जाकर पास,
बनाता उन्हें सफल इन्सान।।

रचना
सुप्रिया सिंह (स०अ०)
क०वि० बनियामऊ
मछरेहटा, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5117

दिनांक- 06/09/2022 दिन- मंगलवार

1857 का नायक धनसिंह कोतवाल

वीर शहीदों की भूमि को,
नमन सब बारम्बार करो।
मंगलपाण्डे धन सिंह गुर्जर की,
शहादत मिल सब याद करो।।

प्राणों की आहुति देकर,
आजादी का बिगुल बजाया था।
बन्द जेल से गोरों की,
सैनिकों को छुड़वाया था।।

दिल्ली तक हमला बोला,
अंग्रेजों का शासन हिलाया था।
सन 1857 का क्रान्ति नायक,
धनसिंह गुजर कहलाया था।।

उसका बदला लेने की खातिर,
4 जुलाई 1857 की रात में।
कुछ को तोपों से, कुछ को फांसी से,
मार डाला बात ही बात में।।

रचना-
प्रेमचंद (प्र०अ०)
उ०प्रा०वि०सिसौला खुर्द
क्षेत्र-जानी,मेरठ।

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06.09.2022 दिन- Tuesday

5118

Teacher

An ordinary simple person,
Who works daily and diligently.
Least bothered about situations,
Lives his life gently.

He thinks about others,
How to give more to them.
So that they could grasp,
And he could create a gem.

We all know him as Teacher,
Respect him throughout our life.
All through his life acts as a reacher,
Like him we should also strive.

Created by- Shweta
P. S. Roja jalalpur
Bisrakh, G.B. Nagar

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06/09/2022 दिन- मंगलवार

5119

बर्फ का गोला

खट्टा-मीठा बर्फ का गोला,
काला-खट्टा बर्फ का गोला।
जल्दी-जल्दी ले लो आकर,
कुल्फी वाला गली में बोला।।

मीनू,रीनू का जी ललचाया,
झट से दरवाजा खोला।
मुझे देना काला वाला और,
मुझे हरा वाला, दीनू बोला।।

जब आई पैसों की बारी,
मम्मी के पास दौड़े दोनों।
कोई नहीं ठण्डा खायेगा,
चलो उसे अब जाने दो।।

दोनों बच्चे खड़े थे चुप से,
दादी ने उनको पास बुलाया।
ठण्डे मौसम में ठण्डा न खाओ,
बीमार पड़ोगे ये समझाया।।

रचना
ज्योति सागर' सना (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5120

दिनांक- 06-09-2022 दिन- मंगलवार

गणपति बप्पा मोरया

हे! पार्वती के नन्दन,
मैं करूँ तुम्हारा वन्दन।
हे! लम्बोदर महाराज,
हर लो सब दुःख आज।।

लड्डू-मोदक तुम्हें सुहाये,
वाहन तुम्हारा मूषक कहाये।
लम्बोदर भी तुम ही कहलाये,
विघ्नहर्ता बन विघ्न हर जायें।।

हे! शंकर-गौरा के लाल,
कर दो कुछ ऐसा कमाल।
झूठ-छल मिट जायें जगत से,
नव-संसार सृजित हो फिर से।।

लालच का छाया हर ओर अन्धेरा,
हे! गजानन अब लाओ नया सवेरा।
दुखियारा ना कोई जग में रह जाये,
सबके हृदय बस गणपति बस जायें।।

रचना
ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना,
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06/09/2022 दिन- बुधवार

5121

शिक्षक दिवस

अच्छे-बुरे का जो भेद बतलाते,
जीने की सच्ची राह हैं दिखलाते।
हर पथ पर हैं साथ जो निभाते,
सच्चे गुरु हैं वो कहलाते।।

आड़ी-टेढ़ी लकीर खींचकर,
कलम पकड़ना सिखाते हैं।
ज्ञान रूपी दीपक जलाकर,
अज्ञानता को मिटाते हैं।।

बालमन की व्यथा समझते,
नैतिकता का पाठ पढ़ाते।
जीवन लक्ष्य हैं सुदृढ़ बनाते,
सच्चे गुरु हैं वे कहलाते।।

कभी जो मन की पीड़ा हर लेते,
कभी विश्वास हैं मन में भर देते।
हमारी सच्ची पहचान हैं कराते,
सच्चे गुरु हैं वे कहलाते।।

रचना-
देवेश्वरी सेमवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा०वि०- कान्दी
ब्लॉक- अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5122

दिनांक- 07/09/2022 दिन- बुधवार

हौसला

प्रहरी बने है सरहदों पर,
ये हौसलों की ही उड़ान हैं।
ऐसे वीर सपूतों से ही,
हिन्दुस्तान की शान हैं।।
वीर जवानों के कारण ही,
हर एक घर मे शान्ति हैं।
इनके हौसलों का लोहा,
सारी दुनिया मानती हैं।।

सच्ची सेवा भारत माँ की,
निःस्वार्थ ही करते हैं।
भूख-प्यास से ऊपर उठकर,
रक्षा देश की करते हैं।।

परिवार से दूरी सहते,
कभी न मन की पीड़ा कहते।
हौसलों के दम पर ही तो,
सरहद पर तैनात हैं रहते।।

रचना-
रामकुमारी (स०अ०)
प्रा० वि० खालिदपुर- 2
मवाना, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07.09.2022 दिन- बुधवार

5123

शिक्षा और शिक्षक

मिले न अगर गुरु का सहारा,
मिटे न मन का अँधियारा ।
लक्ष्य नहीं दिखायी पड़ता,
पग आगे रखते मन डरता ।।

अक्षर-अक्षर हमें सिखाते,
शब्द-शब्द का अर्थ बताते।
जोड़-घटाना, गुणा बताते ,
संख्या-जोड़ भाग सिखलाते।।

इतिहासों की कथा सुनाते,
धरती का भूगोल बताते।
कब, क्या होता! विज्ञान पढ़ाते,
खेल-खिलौने, गीत-गवाते।।

अच्छे-बुरे में भेद बताते,
नैतिकता का पाठ पढ़ाते।
ऐसे गुरु को हम शीश नवाते,
राधा कृष्णन् जन्मोत्सव मनाते।।

रचना
शीबा नाज़ अंसारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० बैसनपुरवा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07/09/2022 दिन- बुधवार

5124

शिक्षक

शिक्षा को रोपित करे, भरे ज्ञान भण्डार,
दूर करे जो जन-जन का अज्ञान-अन्धकार।
वो ही शिक्षक है सफल, वो ही गुरु महान,
विकसित करें जो बच्चों में धर्म-संस्कार।।

सच्चा शिक्षक सूर्य सा धरती का आधार,
कनक कौमुदी बरसाता प्रभु का है अवतार।
कोई नहीं छोटा-बड़ा, हर बच्चा अपना लगे,
विद्यालय को मानता जो अपना परिवार।।

पावन-पावक उर लिए, ले पुस्तक हथियार,
काट रहा बेड़ी तम की, निकले ज्ञान की धार।
बुद्धि-विवेक जगा रहा, सुप्त ह्रदय में आज,
बच्चे-बच्चे में करे, जीवन का संचार।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07/09/2022 दिन- बुधवार

5125

जीवन एक अवसर

जीवन एक अवसर,
बुद्धि का विकास करो।
भलाई को बढ़ाओ,
बुराई का सत्यानाश करो।।

मानव ही कर्ता है,
कर्म पर विश्वास करो।
ज्ञान बहुत जरूरी है,
ज्ञान को आत्मसात करो।।

जिस क्षेत्र में भी जाओ,
उसमें अपना नाम करो।
सीखने की मंशा रखो,
खुद पर विश्वास करो।।

सोच कदापि न हो छोटी,
सकारात्मकता का विस्तार करो।
जीवन एक अवसर है,
व्यर्थ न प्रलाप करो।।

रचना-
मनीष त्रिवेदी
प्राथमिक विद्यालय हमीरपुर
रसूलाबाद, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07-09-2022 दिन- बुधवार

5126

आज तिरंगा फहराएँ

आओ हर घर चलें साथ ले, आज तिरंगा फहराएँ।
आजादी का अमृत उत्सव, निर्विवाद-निर्द्वन्द्व मनाएँ॥

हर कुटिया, हर भवन, इमारत,
मन्दिर, मस्जिद जा-जा कर।
चर्च और गुरुदारे में भी,
आएँ झण्डा फहराकर॥

राष्ट्र प्रेम से भरा हृदय हो, जन-गण-मन अधिनायक गाएँ।
आजादी का अमृत उत्सव निर्विवाद-निर्द्वन्द्व मनाएँ॥

जाति, धर्म, मजहब को पीछे,
छोड़ बढ़ें अब आगे हम।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
छुआछूत से जागें हम॥

गले दो नहीं रहें देश में, कण्ठ मधुर मिल करके गाएँ।
आजादी का अमृत उत्सव, निर्विवाद-निर्द्वन्द्व मनाएँ॥

रचना
रामचन्द्र सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० जगजीवनपुर-2
ऐरायां, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07.09.2022 दिन- बुधवार

5127

शिक्षक सम्मान दिवस

शिक्षा है देता जो समाज को,
वो ही अध्यापक कहलाता।
राधाकृष्णन जी का जन्म दिवस
"अध्यापक दिवस" कहा जाता।।

परतन्त्र थी जब भारत माता,
रुग्णता, अशिक्षा, विपन्नता।
सामाजिक भेदभाव फैला,
अस्पृश्यता, जातीयता, मलीनता।।

भारत माता की मुक्ति हेतु,
शिक्षक बन ज्ञान की ज्योति जलायी।
राधाकृष्णन जी बने शिक्षक,
बैरिस्टर, कुलपति बन आभा फैलायी।।

भारत माँ को आजाद करा,
नेतृत्व किया शिक्षक बनकर।
भारत रत्न विभूषितमय हो,
हुआ देश न्यौछावर तुम पर।।

रचना
उमेश चन्द्र वर्मा (प्रवक्ता)
रा० इ० कालेज निशातगंज
लखनऊ, उ०प्र०

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07.09.2022 दिन- बुधवार

5128

पिता

सपनों की मंजिल पर जाने के लिए,
लम्बी सी सीढ़ी के समान है पिता।
संकट की घड़ी में बनकर हौसला,
ईश्वर की प्रतिमा से महान है पिता।।

सर को ढके जो धूप में बनकर साया,
वट वृक्ष के जैसी जिसकी घनी छाया।
चहुँ ओर फैला एक आसमान है पिता,
ईश्वर की प्रतिमा से महान है पिता।।

आँसुओं को अपने दिखने नहीं देता,
बनकर कड़क खुद को झुकने नहीं देता।
टूटे न कभी ऐसा स्वाभिमान है पिता,
ईश्वर की प्रतिमा से महान है पिता।।

सम्बल बन हर मुश्किल में रहता जो खड़ा,
जीवन की हर बाधा से हरदम है लड़ा।
घोर अँधेरे में भी प्रतिमान है पिता,
ईश्वर की प्रतिमा से महान है पिता।।

रचना- पारुल चौधरी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 हरचन्दपुर
खेकड़ा, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08.09.2022 दिन- गुरुवार

5129

पाँच सितम्बर...

सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन्,
जिनका जन्मदिवस हैं मनाते।
पाँच सितम्बर पावन तिथि को,
शिक्षक दिवस का पर्व मनाते।।

यह दिन उन गुरुओं को समर्पित,
जिनसे पाया है हर ज्ञान।
जीवन की हर जंग को जीता,
पाया धन, दौलत, सम्मान।।

अक्षर और अर्थ सिखलाते,
जीवन क्या है, ये समझाते।
हर बाधा, हर कठिनाई से,
पार निकलना हमें बताते।।

गीली मिट्टी जैसे बच्चे,
गुरु ही सुन्दर मूर्ति बनाते।
सदा हमें देते जो शिक्षा,
आज उन्हें हम शीश नवाते।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08.09.2022 दिन- गुरुवार

5130

नन्दा देवी

भादों मास की अष्टमी को,
नन्दाष्टमी मनाया जाती।
उत्तराखण्ड की सबसे ऊँची,
चोटी के सदृश्य मूर्ति बनायी जाती।।

पहले जो स्तम्भ हिलता वह,
देवी नन्दा बनाया जाता।
दूसरा हिला हुआ स्तम्भ,
सुनन्दा का रूप है पाता।।

षष्ठी के दिन गोधूलि बेला में,
केले के वृक्ष को पूजा जाता।
दीप जलाकर अक्षत को कदली,
स्तम्भ पर फेंका जाता।।

तीसरे स्तम्भ से देवी शक्तियों के,
हाथ-पैर बनाकर पूजन करते।
नवमी या दशमी को इनका,
जल में हैं विसर्जन करते।।

रचना
सावित्री आर्य (प्र० अ०)
रा० क० उ० प्रा० वि०
छीडा गांजा भीमताल, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08/09/2022 दिन- गुरुवार

5131

गुरु

गुरु बिन ज्ञान नहीं होता है,
जग में मान नहीं होता है।
गुरु के चरणों से बढ़कर के,
ऊँचा स्थान नहीं होता है।।

गुरु-शिष्य का नाता पावन,
मरु में ज्यों हरियाला सावन।
अपना रोम-रोम करता है,
गुरु चरणों का ही आराधन।।

जीवन में नव रंग भरते हैं,
क्षमता संवर्धन करते हैं।
मन से बहुत दुलार करें पर,
भृकुटी टेढ़ी भी रखते हैं।।

हम हैं गुरुओं के आभारी,
सिखलायी विद्याएँ सारी।
गुरुओं का सम्मान करें हम,
जाते हैं उन पर बलिहारी।।

रचना-
मुक्ता शर्मा (स०अ०)
K.G.B.V
परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08-09-2022 दिन- गुरुवार

5132

गुरु-शिष्य

गुरु हैं दीप, शिष्य हैं बाती,
हम शिष्यों के गुरु हैं साथी।
गुरु से हमको रहती आस,
गुरु का करते मन से विश्वास।।

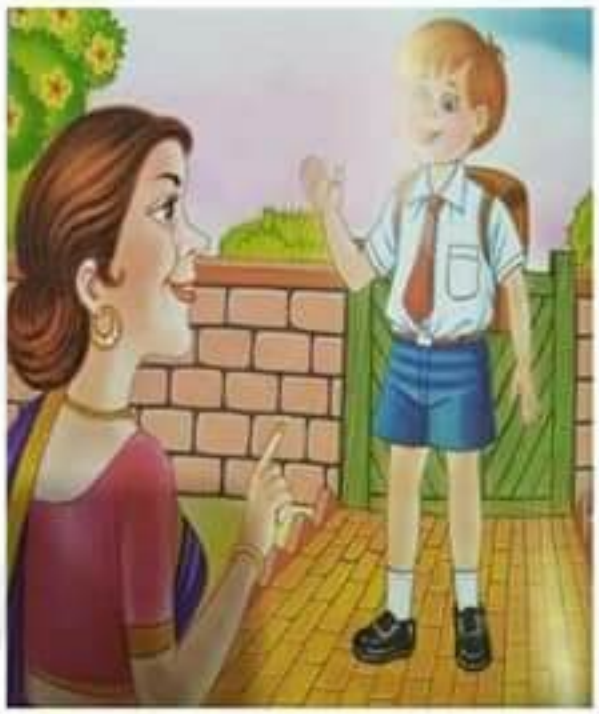

गुरु की पीड़ा हर देते,
जीवन सरल सुगम कर देते।
भले-बुरे का ज्ञान कराते,
मन में ज्ञान का दीप जलाते।।

गुरु ज्ञान के रक्षक हैं,
शिक्षक बन करते उद्धार।
फँसा हो जो जीवन नैया में,
उसका बेड़ा करते पार।।

नहीं है शब्द कैसे करूँ गुणगान,
देते आप सही-गलत की पहचान।
मिलता रहे आपका आशीर्वाद,
दूर हो जायें सारे अवसाद।।

रचना
अनुपमा जैन (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० मौहकमपुर
इगलास, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08.09.2022 दिन- गुरुवार

5133

कर्म का फल

सत्कर्म करता जा रे मानस,
वरना बहुत पछताएगा।
तेरा हर संचित कर्म ही,
तेरा प्रारब्ध बनाएगा।।

इस जन्म में न हो पाया,
जो ये हिसाब चुकता।
संग तेरे ये उधार,
अगले जन्म तक जाएगा।।

बुरे कर्म करेगा जो तू,
पाप की गठरी उठाएगा।
बद्दुआएँ मिलेंगी सबकी,
न चैन से तू जी पाएगा।।

कर तू अब से ये प्रण,
न किसी का दिल दुखाएगा।
छाप छोड़ देगा दुनिया पर,
तू मिसाल बन जाएगा।।

रचना- भावना तोमर (स0अ0)
प्रा0 वि0 न. 1 मवीकलां
खेकड़ा, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

5134

दिनांक- 09.9.2022 दिन- शुक्रवार

गुरु दिवस

रोज विशेष दिवस हैं आते,
जीवन के पल को दर्शाते।
पाँच सितम्बर दिन है आता,
शिक्षक दिवस है जो कहलाता।।

पढ़ें-बढ़ें सब शिक्षा पाएँ,
गुरु होने का फर्ज निभाएँ।
पग-पग ज्ञान के दीप जलाएँ,
ऐसे गुरु को शीश झुकाएँ।।

पाँच सितम्बर दिवस है प्यारा,
जन्मदिन महापुरुष का न्यारा।
शिक्षाविद का सब देते नारा,
भारत का जो चमकता तारा।।

तीन जनवरी याद दिलाता,
जन्मदिन सावित्रीबाई फूले का आता।
नारी शिक्षा की तीव्र चिंगारी,
भारत में जन्मी पहली नारी।।

रचना
सुरेश कुमार (प्र०अ०)
प्रा० वि० बाँसुरा (प्रथम)
रामपुर मथुरा, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09/09/2022 दिन- शुक्रवार

5135

शिक्षक होते वट वृक्ष जैसे

शिक्षक होते तरु के जैसे,
शिष्यों की प्राणवायु जैसे।
उनका व्यक्तित्व गहन इतना,
वटवृक्ष की जड़ हो जैसे।।

लहलहा झूम-झूम कर,
शिष्यों की उपलब्धि को हुलसते।
अपनी शाखाओं के आगोश में,
हमें कोमल पत्तों-सा समेटते।।

वृहद मन्दल के हृदय में,
अनगिनत कोटर पनपने देते।
नीड़ जिनकी शरण में बना,
शिष्य सदैव उन्नति करते।।

अपने ज्ञान के फल सब में,
एक समान वितरित करते।
जीवन की हर ऋतु में,
छाँव, ठण्डक, आसरा देते।।

रचना-
ऋतु अग्रवाल (शिक्षिका)
रागिनी संगीतशाला,
ब्रह्मपुरी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09.09.2022 दिन- शुक्रवार

5136

आदर्श शिक्षक

जो बोर्ड पर लिखकर,
बच्चों को समझाते हैं।
'अ' अनपढ़ से लेकर,
'ज्ञ' ज्ञानी तक सिखाते हैं।।

बच्चों को नित नये,
प्रयोग करके दिखाते हैं।
वास्तव में वही तो एक,
आदर्श शिक्षक कहलाते हैं।।

सपने देखने का मार्ग,
बच्चों को सुझाते हैं।
उन्हें पूरा करने का,
तौर-तरीका बताते हैं।।

घनी अँधेरी दीवारों पर,
रोशनी की मुहर लगाते हैं।
वास्तव में वही तो एक,
आदर्श शिक्षक कहलाते हैं।।

रचना- अशोक अन्तिल (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 सुल्तानपुर हटाना
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09-09-2022 दिन- शुक्रवार

5137

नन्दलाल

कान्हा ने जन्म लिया देवकी के द्वार,
खड़े थे हर ओर द्वारपाल।
देवकी का हृदय भी काँपा एक बार,
कैसे बचेगा कंस से मेरा लाल?

वसुदेव ने आँखों से ही किया इकरार,
रखो विश्वास ये है जगत पालनहार।
केवल कंसवध ही नहीं करेगा,
ये करेगा सारे दुष्टों का संहार।।

लिया टोकरी में जगपालनहार,
और चले पड़े नन्द जी के द्वार।
देकर यशोमति को लाल,
फिर लौट पड़े तत्काल।।

गोकुल में चहुँ ओर हो गया शोर,
आ गये है नन्दलाल।
माँ यशोदा के जन्मे माखनचोर,
सबको करने निहाल।।

रचना
पूनम सारस्वत (स०अ०)
एकीकृत विद्यालय रुपानगला
खैर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09.09.2022 दिन- शुक्रवार

5138

गुरु

जिन्दगी के प्रश्न थे कई,
जो समझे, प्रकाश दिखा गये।
भगवान है कि नहीं यहाँ,
जिन्दगी का सार बता गये।।

गुरु को भगवान से बड़ा,
स्थान दे दिया गया।
सार जीवन का सभी को,
समझा दिया गया।।

जिन्होंने हममें उसे देखा,
जो हम भी नहीं समझ पाये थे।
हममें भी कुछ बात खास है,
वे हमें अहसास करा आये थे।।

कभी लगता है कैसे उनका,
हम मिलकर ऋण उतारें।
वह कहते कुछ नहीं, बस!
प्रेरणा बन हृदय को सँवारें।।

रचना
पुष्पा तिवारी (स० अ०)
रा० उ० प्रा० वि० आमबाग
टनकपुर, चम्पावत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09/09/2022 दिन- शुक्रवार

5139

गजानन

गजानन बिराजे, आओ! स्वागत करें,
गाजे से, बाजे से आओ! स्वागत करें।
चौकी सजाएँ, आसन लगाएँ,
मखमल की सुन्दर चादर बिछाएँ।।

रेशमी वस्त्र तन पर पहनाएँ,
हल्दी, सिन्दूर का तिलक लगाएँ।
दूब, पुष्प, केलिपत्र, फल भी चढ़ाएँ,
लड्डू, मोदक से प्रभु का भोग लगाएँ।।

धूप, दीप की आरती सजाएँ,
तेल, फुलेल, इत्र महकाएँ।
लौंग-इलायची, ताम्बूल खिलाएँ,
भावों भरी श्रद्धा हृदय में अपनाएँ।।

हल्दी, कुमकुम, अक्षत सजाएँ,
चोला सिन्दूर भी हम चढ़ाएँ।
गंगाजल, पंचामृत से स्नान कराएँ,
खीरा, नींबू से जन्मोत्सव मनाएँ।।

रचना-
अंजू गुप्ता (प्र०अ०)
प्रा० वि० खम्हौरा- प्रथम,
महुआ, बाँदा

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक-10/09/2022 दिन- शनिवार

5140

लौटा दो मुझे मेरा बचपन,
मैं जिसमें अभी भी जीती हूँ।
जब भी मौका मिल जाता है,
मैं उन यादों को जीती हूँ।।

संगी-साथी, वो खेल नये,
याद उन्हें मैं करती हूँ।
जब जीती थी मैं हँस-हँसकर,
अब घुट-घुटकर मरती हूँ।।

बचपन का अनमोल खजाना,
खो गया ना जाने कहाँ?
कहीं नहीं मिल पाया मुझको,
ढूँढ़ लिया मैंने सारा जहाँ।।

अब अपने बच्चों के संग,
मैं अपना बचपन जीती हूँ।
घर और विद्यालय दोनों में,
मैं उनके संग खेलती हूँ।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10/09/2022 दिन- शनिवार

5141

मन की बात

शिक्षक दिवस पर सभी से,
एक बात कहना चाहती हूँ।
जब भी जन्म लूँ धरती पर,
शिक्षक ही रहना चाहती हूँ।।

भविष्य के छोटे ख्वाब सजाकर,
उन्हें कोरे कागज पर बनाती हूँ।
'अ' अनपढ़ से शुरू कर,
'ज्ञ' से ज्ञानी तक पहुँचाती हूँ।।

मैं केवल शिक्षक हूँ,
बच्चों को पढ़ाती हूँ।
चन्द्रमा तक जाने की,
पहली सीढ़ी बनाती हूँ।।

पाठ्यक्रम व हैप्पीनेस से,
बच्चों का परिचय कराती हूँ।
अपनी बहुत-सी इच्छाओं को छोड़ देती हूँ,
लेकिन उन्हें कभी नहीं जताती हूँ।।

रचना-:
विद्यारानी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० सलड़ी
ब्लॉक- भीमताल, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10.9.2022 दिन- शनिवार

5142

प्रस्तावना (संविधान)

एक वाक्य में लिखा गया है,
संविधान का दर्पण है।
संविधान का सार निहित है,
और मूल भी दर्शन है।।

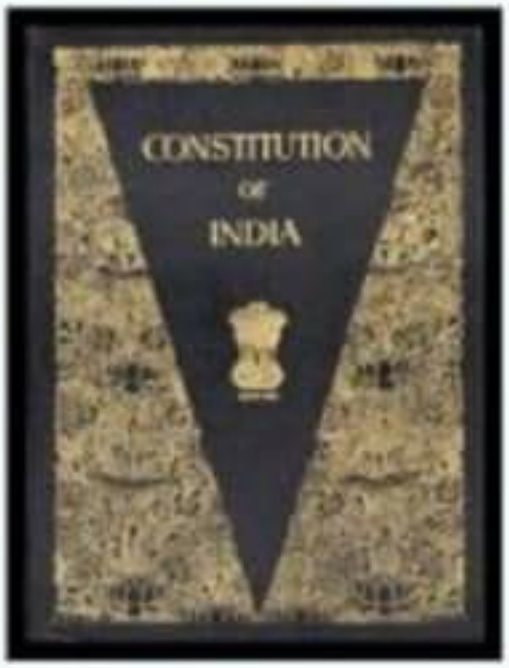

यू० एस० ए० से विचार अपनाया,
भाषा ऑस्ट्रेलिया से।
न्याय का दर्शन रसियावाला,
S.S.B.(स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व) फ्रांसिसिया से।।

अन्य नाम, आमुख, उद्देशिका,
से भी सब इसे जानते हैं।
संविधान के पावन पन्ने,
हम सब इसे मानते हैं।।

रचना
अनिल कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० तेलियानी (प्रथम)
मिश्रिख, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10-09-2022 दिन-शनिवार

5143

मैं करूँ, हम करें, तुम करो

तुम करो, हम करें, मैं करूँ,
मैं करूँ, हम करें, तुम करो।
खुशियाँ सबको बाँटा करो,
जीवन अपना सुन्दर करो।।

तुम करो, हम करें, मैं करूँ,
मैं करूँ, हम करें, तुम करो।
दोष अपने खूब देखा करो,
गलत काम करने से डरो।।

तुम करो, हम करें, मैं करूँ,
मै करूँ, हम करें, तुम करो।
चरित्र अपना मजबूत करो,
पीड़ा दूसरे की हरा करो।।

तुम करो, हम करें, मै करूँ,
मै करूँ, हम करें, तुम करो।
महान व्यक्तित्व पढ़ा करो,
राह उनकी चला करो।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी
जवाँ, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10.09.2022 दिन- शनिवार

5144

मोर

भारत का राष्ट्रीय पक्षी है मोर,
कुँह-कुँह से वन में मचाता शोर।
कृष्ण-मुकुट में मोर-पंख सजता,
पक्षियों का राजा कहलाता मोर।।

सावन में जब आसमान में छायें,
चारों ओर काली घटाएँ घनघोर।
शीतल बूँदों में भीग-भीगकर नाचे,
छम-छमाछम सुन्दर सुन्दर मोर।।

ताल-तलैया में है जल भर जाता,
जंगल में दिखते हैं मोर चहुँ ओर।
ताली बजा-बजाकर सब बच्चे,
खुश होकर बहुत मचाते हैं शोर।।

माथे पर सुन्दर कलगी रखता मोर,
रंग-बिरंगे पंखों पर तुम करना गौर।
पावस ऋतु सदा इसे होती प्यारी,
नीले पंख फैलाकर खूब नाचे मोर।।

रचना- पूनम नैन (स0अ0)
कम्पोजिट उ0 प्रा0 वि0 मुकंदपुर
छपरौली, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 12.09.2022 दिन- सोमवार

5145

काम के सभी
भाग-2

उलझ रहे दोनों आपस में,
लगे मचाने हल्ला-गुल्ला।
खुद ही अपने गीत गा-गाकर,
कह रहे मैं बड़ा तू छोटा।।

टपका तभी हँसू बन्दर,
मोबाइल मुँह में खोस दिया।
मार पैडल साइकिल पर चार,
सड़क से नीचे लुढ़क गया।।

फूटा मोबाइल टूटी साइकिल,
दोनों अपने हाल पर रो रहे।
न कोई छोटा न कोई बढ़ा,
सभी काम के दुनिया सब से चले।।

रचना-
दीवान सिंह कठायत (प्र०अ०)
रा० आ० प्रा० वि० उडियारी
वि० ख०- बेरीनाग, पिथौरागढ़

शिक्षा का उत्थान मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 12-09-2022 दिन- सोमवार

5146

एक ही सपना

मेरा सपना इस जीवन का,
औरों का जीवन महकाऊँ,
औरों के जीवन की खुशियाँ,
अपने अँगना आज सजाऊँ।।

महके हर घर में फुलवारी,
गीत खुशी के गायें सब।
पीपल, बरगद हर पडौस में,
हों, छाया में बैठें सब।।

बच्चे हों शिक्षित समाज हो,
किलकारी गूँजे चहुँ ओर।
पढें-बढें सब प्रेमपूर्ण हों,
हो उन्नति ज्यों मेघों का शोर।।

उजियारा चहुँ ओर खुशी हो,
शीतलता न गर्मी हो।
विनयशीलता लोगों के उर,
हो सुविचार व नरमी हो।।

रचना-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा०वि०- बम्हौरी,
मऊरानीपुर (झाँसी)

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 12/09/2022 दिन- सोमवार

5147

राणा प्रताप

हल्दी घाटी के युद्ध मे ऐसी,
वीरता की कहानी गढ़ी गयी।
प्रताप की वीरता के कारण ही,
राणाओं की गाथा गढ़ी गयी।।
राजपूत वह वीर निराला,
मेवाड का रणबाँकुर आला।
राजपुतानी आन-बान का,
दिव्य शूरवीर वह मतवाला।।

चेतक प्रिय था घोड़ा जिनका,
और प्रिय अस्त्र भाला था।
मुगलो से जो नहीं घबराया,
वह ऐसा वीर निराला था।।

इतिहास भूल नही पायेगा,
हल्दी घाटी के मंजर को।
चेतक की जान जो ले गया,
दुश्मन के उस खंजर को।।

रचना-
रामकुमारी (स०अ०)
प्रा० वि० खालिदपुर- 2
मवाना, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 12.09.2022 दिन- सोमवार

5148

समय

समय चलता अपनी चाल से,
न किसी से कभी रुक पाता है।
समय के हिसाब से जो चलता,
समय से अपनी मंजिल पाता है।।

सूरज उगता रोज सवेरे,
नित्य शाम को छिप जाता है।
उगना छिपना नियम सृष्टि का,
जगत को यही बात सिखाता है।।

पौधे बोयें किसी भी समय पर,
नियत समय पर ही फल आता है।
जल्दबाजी से कुछ नहीं मिलता,
धैर्यधारी बनने का पाठ पढ़ाता है।।

सर्दी, गर्मी, बरसात का मौसम,
नियत समय पर बदलता जाता है।
निश्चित समय पर नियमानुसार,
वातावरण परिवर्तित हो जाता है।।

रचना- अमित गोयल (स0अ0)
प्रा0 वि0 निवाड़ा
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5149

दिनांक- 12-09-2022 दिन- सोमवार

दिशाओं का ज्ञान

प्यारे बच्चों! आओ-आओ!
मेरे साथ खेलो और गाओ।
आओ हम सब जानें आज,
दिशा ज्ञान का गहरा राज।।

जिस दिशा से सूरज उगता,
हम उसको पूरब है कहते।
जिस दिशा में सूरज छिपता,
हम उसको पश्चिम है कहते।।

जहाँ हमारा खड़ा हिमालय,
उसको उत्तर कहते हैं।
और जहाँ सागर लहराए,
उसको दक्षिण कहते है।।

चार दिशाएँ होती है ये,
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।
याद कर लो तुम सब ये,
अँगुलियों पर गिन-गिन।।

रचना
रजनी सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० नगलिया सोफ़ा
खैर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5150

दिनांक- 12/09/2022 दिन- सोमवार

'एकता में शक्ति'

जंगल में एक शेर आ गया,
भागे, डरगये शेर आ गया।
सारे जानवर उससे डरते,
इधर-उधर छुप, भागे फिरते।।

तीन बैल थे प्रेम से रहते,
साथ घूमते, मिलकर चरते।
शत्रुभाव नहीं दिया दिखायी,
जंगल में चर्चा दी सुनायी।।

सोचे शेर कैसे इन्हें लड़ाऊँ?
जंगल में अफवाह फैलाऊँ।
तीनों बैल आपस में झगड़े,
अलग हुये तीनों बन तगड़े।।

शेर था खुश बैल एक मारा,
खाया मार दूसरा दोबारा।
तीसरे बैल की समझ आयी,
एकता में ही 'शक्ति' भाई।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13-09-2022 दिन- मंगलवार

5151

मैं क्या खाऊँ

बिल्ली सोचे, म्याऊँ-म्याऊँ,
भूख लगी है, मैं क्या खाऊँ?
मम्मी लायी है दूध मलाई,
उधर से चुहिया दौड़ी आयी।।

जीभ मेरी खूब ललचाये,
मुँह में देखो पानी आये।
मैं तो अब कुछ समझ ना पाऊँ?
इसको खाऊँ या उसको खाऊँ?

दूध-मलाई मुझे सुहाये,
चुहिया भी है मन को भाये।
दूध-मलाई से पेट भर जाये,
चुहिया-रानी स्वाद बनाये।।

तभी दौड़ी-दौड़ी छोटी सिम्मी आई,
चुहिया चट कर, फैलायी दूध-मलाई।
देखो मैं अब बैठी-बैठी पछताऊँ,
अब मैं क्या खाऊँ, अब मैं क्या खाऊँ?

रचना
ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

शनिवार

5152

दिनांक- 13.09.2022 दिन- मंगलवार

हिन्दी भाषा

यही है प्रेम की भाषा,
यही रसखान की हिन्दी।
हमारी सभ्यता और संस्कृति,
का मान है हिन्दी।।

हृदय को जोड़ने वाली,
हृदय की भावना हिन्दी।
सहज अभिव्यक्ति, सादर भाव है,
समभाव है हिन्दी।।

बना देती अखिल संसार को,
परिवार है हिन्दी।
फिजी, त्रिनिदाद, मॉरीशस,
गुयाना बोलती हिन्दी।।

है खुसरो, खानखाना की,
निराला, पन्त की हिन्दी।
यही है गाँव की भाषा,
यही है राष्ट्र की हिन्दी।।

रचना
रूपकिशोर अवस्थी (प्र०अ०)
प्रा० वि०- शेखवापुर
परसेण्डी, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13.09.2022 दिन- मंगलवार

5153

कलम

मन की जुबानी,
होती है कलम।
सुख-दुःख की,
रवानी होती है कलम।।

सारे दर्द अपने में समेटकर,
चेहरे पर सन्तोष झलकाती।
खुद में कहानी,
होती है कलम।।

खिलखिलाते हुए,
किस्सों का झरोखा।
खुशियों की मेजबानी,
होती है कलम।।

सपनों से जगाकर,
हकीकत से रूबरू कराती।
एक भौर श्यानी,
होती है कलम।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर
जानी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13-09-2022 दिन- मंगलवार

5154

वर्णमाला भाग-1

क से ककड़ी को लाकर के,
ख से खरबूजा खाएँगे।
ग से गमला में लगा पेड़,
घ से घर खूब सजाएँगे॥
ङ खाली मुस्काएँगे॥

च से चम्मच चाचा-चाची,
छ से छाता ले जाएँगे।
ज से जग में जल भर कर के,
झ से झण्डा लहराएँगे॥
ञ खाली मुसकाएँगे॥

ट से टाठी लोटा लेकर,
ठ से ठग मार भगाएँगे।
ड से डमरू की डुग-डुग-डुग,
ढ से ढम ढोल बजाएँगे॥
ण खाली मुस्काएँगे॥

रचना
रामचन्द्र सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० जगजीवनपुर-2
ऐरायाँ, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13/09/2022 दिन- मंगलवार

5155

शिक्षक दिवस

विद्या देते, ज्ञान गुरुजी,
हर लेते अज्ञान गुरुजी।
अक्षर-अक्षर हमें सिखाते,
शब्द-शब्द का अर्थ बताते।।

कभी प्यार से, कभी डाँट से,
हमको देते ज्ञान गुरुजी।
जोड़-घटाना, गुणा-भाग बताते,
प्रश्न गणित के हल कराते गुरुजी।।

हर गलती को ठीक कराते,
कभी पढ़ाते, कभी लिखाते।
धरती का भूगोल बताते,
इतिहास की कथा सुनाते।।

कब, क्या, क्यों, कैसे होता है?
समझाते विज्ञान गुरुजी।
अच्छे और बुरे की हमको,
करवाते पहचान गुरुजी।।

शोभा दुर्गापाल (स०अ०)
रा० प्रा० वि० देवकाधुरा
ब्लॉक- भीमताल, नैनीताल

new text

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13/09/2022 दिन- मंगलवार

5156

मेरी प्यारी हिन्दी

हिन्दी हमारी मातृभाषा,
फिर हिन्दी बोलने में शर्मिंदगी क्यों?
हिन्दी हमारी राजभाषा,
अंग्रेजी को इतना सम्मान क्यों?

कहीं भी जाते साक्षात्कार को,
नजरअंदाज करते सभी हिन्दी को।
अंग्रेजी में सवाल जवाब हैं होते,
अनपढ़ की श्रेणी में रखते हिन्दी को।।

हिन्दी भाषी को क्यों नहीं ज्ञानी बोलते?
क्यों बढ़ चढ़कर सब अंग्रेजी बोलते?
हिन्दी भाषा में है इतना ज्ञान भरा,
नहीं हो सकता कोई उसके सामने खड़ा।।

क्यों नहीं हिन्दी को आज भी,
राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जा रहा?
क्यों नहीं अंग्रेजी को आज भी,
हिन्दुस्तान से विदा किया जा रहा।

रचना- सीमा शर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14.09.2022 दिन- बुधवार

5157

भारत वन्दना

भारत माँ हे! वन्दन तेरा,
हम सब करेगें अभिनन्दन तेरा।

ऊँची-ऊँची चोटियों में,
शिव जी का त्रिशूल है।
निचली, निचली घाटियों में,
सुन्दर-सुन्दर फूल हैं।।

देवता भी करते पूजन तेरा,
हम सब करेगें अभिनन्दन तेरा।
माता ऋणी है हर जन तेरा,
हम सब करेगें अभिनन्दन तेरा॥

रचना -
सूरी भारती (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० उठड़
वि० ख० जाखणीधार,
टिहरी गढ़वाल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14.09.2022 दिन- बुधवार

5158

हैं हिन्दी हम ..

ये हिन्दी है भारत की शान,
ये हिन्दी है अपनी पहचान।
मिलेगा हिन्दी को सम्मान,
बढ़ेगा तभी देश का मान।।

ये हिन्दी खुशियों का है गान,
ये हिन्दी ही मैथिली, रसखान।
ये हिन्दी दिनकर की हुंकार,
ये हिन्दी तुलसी के संस्कार।।

राष्ट्र की रग-रग में बहती,
कथानक कबिरा का कहती।
यही हरिऔध की बोली,
है जिसमें वेदना बहती।।

सदा यश गान हो इसका,
रहे ऊँचा सदा परचम।
सभी हम गर्व से कहते,
वतन हिन्दी, हैं हिन्दी हम।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/09/2022 दिन- बुधवार

5159

बदल गयी दुनिया

बदली-बदली लगे दुनिया,
कभी अपना जमाना था।
आज सिस्टम बुफ़े का है,
कभी पत्तल पर खाना था।।

कभी चूल्हे की रोटी थी,
साथ में दाल थी तड़का।
आज जिह्वा को चटकारा,
लगा पिज्जा औ बर्गर का।।

आज उड़ते हवाओं में,
कभी ताँगे बदलते थे।
आज दौड़ाते स्कूटी,
कभी साइकिल पर चलते थे।।

आज बच्चे क्रैच में हैं,
कभी गोदी में पलते थे।
जहाँ रोशन हैं एल०ई०डी०,
दिए मिट्टी के जलते थे।।

रचना :
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक-14/09/2022 दिन- बुधवार

5160

हिन्दी भाषा

अपनी बोली अपनी भाषा,
हिन्दी भारत की परिभाषा।
हिन्दी से पहचान हमारी,
हिन्दी है सबकी अभिलाषा।।

सारी भाषाओं से न्यारी,
हिन्दी है हम सबको प्यारी।
इसका मान बढ़ाएँगे हम,
रहने नहीं देंगे दुखियारी।।

केवल थोथी बातें करके,
बनने वाली बात नहीं है।
बातें तजकर काम करें अब,
बस अब तो यह बात सही है।।

प्रेम बहुत करते हैं इससे,
अब से हम सम्मान करेंगे।
व्यवहारिकता में अपनाकर,
जग में इसका नाम करेंगे।।

रचना-
मुक्ता शर्मा (स०अ०)
K.G.B.V
परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/09/2022 दिन- बुधवार

5161

--- हमारी हिन्दी ---

हिन्दी भाषा हिन्द देश की,
भाषाओं की रानी है।
हिन्दी भारत के गौरव की,
गरिमामयी कहानी है।।

हिन्दी है सन्तों की भाषा,
सूर-कबीर की वाणी है।
हिन्दी है रागों की आशा,
सुरों की यह दीवानी है।।

हिन्दी है माथे की बिन्दी,
यह देवों की वाणी है।
हिन्दी है भारत का गौरव,
दुनिया में एक निराली है।।

हिन्दी का इतिहास न पूँछो,
हिन्दी बहुत पुरानी है।
विश्व की सारी भाषाओं में,
हिन्दी जानी-मानी है।।

रचना- सुमन (प्र०अ०)
प्रा० वि० निस्तौली-2
लोनी, गाजियाबाद

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/09/2022 दिन- बुधवार

5162

स्वागत गीत

स्वागत है, स्वागत है,
स्वागत है, स्वागत है।
अतिथिगण आपका,
स्वागत है, स्वागत है।।

चुन-चुन कलियाँ लाये हैं,
राहों में फूल बिछाये हैं।
हुआ आपका आगमन,
स्वागत है, स्वागत है।।

मधुर वचन से आपके,
आशीष मिले आपसे।
जीवन पुष्प हो पल्लवित,
स्वागत है, स्वागत है।।

हर्षित बेला, पावन धरा है,
नैनों को दरस मिला है।
ह्रदय कँवल हुआ पुष्पित,
स्वागत है, स्वागत है।।

रचना-
रुखसाना बानो (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अहरौरा
जमालपुर, मिर्ज़ापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/09/2022 दिन- बुधवार

5163

हमारी हिन्दी प्यारी हिन्दी

विश्व पटल पर धूम मचाती,
भारत का गौरव कहलाती।
हिन्दी इतनी प्यारी भाषा,
संवाद सहज यह बनाती।।

वर्ण से वर्ण जोड़ जोड़कर,
शब्द बनाना है सिखलाती।
शब्द से शब्द जुड़ते जब,
बात पूरी तब हो पाती।।

जब हम हिन्दी कहते हैं,
भाव उमड़कर आते हैं।
इंग्लिश-विंग्लिश तो,
बस कोरे बोल बनाते हैं।।

हिन्दी को तुम अपनाओ,
ये तुमको गले लगायेगी।
हिन्दी खूब पढ़ो-पढ़ाओ,
ये तुमको आगे बढ़ायेगी।।

रचना
ज्योति सागर' सना (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/09 /2022 दिन- बुधवार

5164

हिन्दी

राष्ट्र भाषा है हिन्दी अपनी,
करते हैं हम सब अभिमान।
राष्ट्र पे मरना, राष्ट्र हित लड़ना,
यह हम सबका हो स्वाभिमान।।

इसी राष्ट्र में जियें, मरें हम,
हम सब का हो अरमान।
अपनी भाषा, बोली, संस्कृति,
हम सबकी यही है पहचान।।

सारे जग से न्यारा है जो,
वह मेरा हिन्दुस्तान है।
जग की सुन्दर भाषा हिन्दी,
करें हम इसका गुणगान हैं।।

एक सूत्र में बाँधा जिसने,
वह हिन्दी भाषा महान है।
सब भाषाओं की जननी है ये,
हिन्दी हमारी पहचान है।।

रचना-:
प्रकाश बड़वाल (स०अ०)
रा० प्रा० वि० मुस्साढुंग
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15.09.2022 दिन- गुरुवार

5165

बेटी की उत्कण्ठा

मैं भी चिड़िया बन उड़ पाती माँ,
पर पंख तुम्हीं तो दे पाओगी।
ऊँचा तो मैं उड़ सकती हूँ,
ऊँची सोच तुम्हीं बना पाओगी।।

तुमने मुझको यही सिखाया,
अच्छी इन्सान मन से बन लूँ।
इस प्रकृति को समझूँ प्यार से,
जीव-जन्तु का स्नेह समझ लूँ।।

पढ़ा-लिखा वही होता है,
जो प्रकृति का संरक्षण कर ले।
मन-मस्तिष्क से ऊँचा उठकर,
सफलता के आकाश को छू ले।।

मन में त्याग हो, कर्म में सेवा,
नि:स्वार्थ कार्य में जब लग जाऊँ ।
तब प्यारी चिड़िया सी स्वछन्द हो,
मैं तेरी सीख को सफल बना पाऊँ ।।

रचना

किरण जोशी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० मैखण्डी मल्ली
वि० ख० -कीर्तिनगर
टिहरी गढ़वाल ।

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15.09.2022 दिन- गुरुवार

5166

हिन्दी दिवस

सहज, सरल, समभाव है,
हिन्दी भाषा नहीं, एक भाव है।
जन-जन की यह भाषा है,
मन में जगाती एक आशा है।।

गाँव से लेकर नगर-क्षेत्र तक,
हिन्दी हमारी पहचान है।
भाषाएँ सब लगती हैं अच्छी,
पर हिन्दी से ही मुस्कान है।।

राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ,
14 सितम्बर 1949 को।
श्रेय जिसका जाता है,
व्यौहार राजेन्द्र सिन्हा को।।

अनेक भाव, शैली से परिपूर्ण,
शब्दों का भण्डार है।
14 सितम्बर को मनाते हिन्दी दिवस,
हिन्दी भारत का सार है।।

रचना
आरती वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० रेवा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15/09/2022 दिन- गुरुवार

5167

बादल काका

घुमड़-घुमड़ कर बादल काका,
आसमान में छाये।
गरज-गरज कर बरस रहे हो,
मस्ती में हो आये।।

रिमझिम-रिमझिम बरस रहे हो,
बिजली बनकर कड़क रहे हो।
खेतों में पानी भर आया,
टर्र-टर्र-टर्र दादुर चिल्लाया।।

शीतल सुरभि बह रही,
ताप धरा का हो गया कम।
वृक्षों पर हरियाली छायी,
खग-कुल में भर गया दम।।

बादल काका बात हमारी मानो,
एक बात हमारी मानो।
पास धरा के तुम आ जाओ,
अपनी छतरी तानो।।

रचनाकार
प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उच्च० प्रा० वि०सिसौला खुर्द
जानी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15.09.2022 दिन- गुरुवार

5168

जुबान है हिन्दी...

मेरी निजी जुबान है,
हिन्दी ही दोस्तों।
मेरे लिए महान है,
हिन्दी ही दोस्तों।।

जो भी लिखूँ, वही पढ़ूँ,
देखो तो खासियत।
हम सबकी आन-बान है,
हिन्दी ही दोस्तों।।

अपनों के द्वारा नित्य,
प्रताड़ित है की गयी।
अब भी लहू-लुहान है,
हिन्दी ये दोस्तों।।

हिन्दी बिना लगती है,
अधूरी सी ज़िन्दगी।
"शमा" के लिए जान है,
हिन्दी ही दोस्तों।।

रचना
शमा परवीन (अनुदेशक)
उ० प्रा० वि०- टिकोरा मोड़
तजवापुर, बहराइच

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15-09-2022 दिन- गुरुवार

5169

हिन्दी दिवस

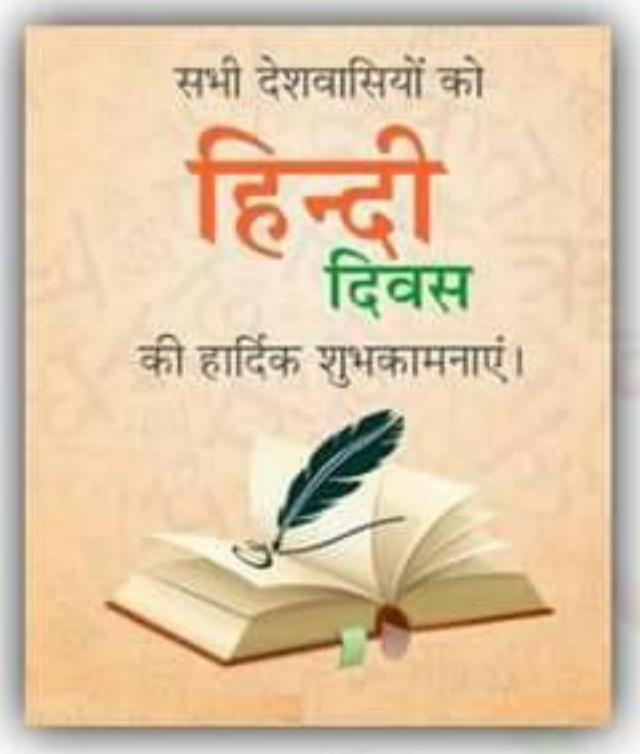

हिन्दी की लिपि देवनागरी,
हिन्दी देव भाषा प्रधान है।
हिन्दी है अति उत्कृष्टतम,
हिन्दी बहुत मूल्यवान है।।

हिन्दी हमारी राज्य भाषा,
हिन्दी से ही हमारी शान है।
हिन्दी से ही कीर्ति अपनी,
हिन्दी से हमारी पहचान है।।

हिन्दी बसी है उर, कण्ठ में,
हिन्दी ही हमारी जान है।
हिन्दी सहायक प्रगति में,
हिन्दी से ही तो सम्मान है।।

हिन्दी से ही भारत में एकता,
हिन्दी का बहुत गुणगान है।
हिन्दी से सुर और संगीत हैं,
हिन्दी भाषाओं की खान है।।

रचना
सुनील कुमार (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय
जौंरा, औरैया।

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15/09 /2022 दिन- गुरुवार

5170

हिन्दी भाषा

राष्ट्र भाषा हमारी सुन्दर हिन्दी,
हमको इस पर अभिमान है।
इससे है गौरव, सम्मान हमारा,
और संस्कृति की पहचान है।।

जैसे ये बोली जाती है,
वैसी ही लिखी जाती है।
जैसे ये लिखी जाती है,
वैसी ही पढ़ी जाती है।।

है सबसे सरल मेरी हिन्दी भाषा,
सबकी समझ में आ जाती है।
हर भाव के लिए शब्द हैं इसमें,
मानस के मन को छू जाती है।।

सदियों से बोली जाती है,
सदियों तक बोली जायेगी।
दुनिया में सारी फैली है,
और दिन-दिन फैलती जायेगी।।

रचना-:
भागीरथी पाण्डे (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० परमा,
वि० ख०- हल्द्वानी, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5171

दिनांक- 15-09-2022 दिन- गुरुवार

हिन्दी दिवस

14 सितम्बर को किया हम सबने,
हिन्दी राष्ट्रभाषा का सम्मान।
सन् 1949 को संविधान में मिला,
हिन्दी राष्ट्रभाषा को स्थान।।

आज लें संकल्प दिलाएँ,
हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान।
हिन्दी है संस्कृति हमारी,
राष्ट्रभाषा का रखें स्वाभिमान।।

तुलसी, सूर, कबीरा, मीरा,
सबने हिन्दी भाषा अपनायी।
हिन्दी का महत्व बहुत है,
जन-मन को है समझायी।।

मातृभाषा हिन्दी हमारी,
हिन्दी ही है वतन हमारा।
हिन्दी उपवन की फुलवारी,
हिन्दी बोले भारत सारा।।

हिन्दी दिवस है पर्व हमारा,
कण-कण में गूँजे गुणगान।
हिन्दी है हिन्दुस्तान हमारा,
विश्व में हिन्दी की पहचान।।

रचना

अनुपमा जैन (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० मौहकमपुर
इगलास, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15/09/2022 दिन- गुरूवार

5172

मातृभाषा हिन्दी

लेखन में हिन्दी से राज करें,
वाणी में हिन्दी से साज करें।
संस्कार से सज्जित हिन्दी,
देश-प्रेम अपरिमित हिन्दी।।

हिन्दी की भक्ति सबल देखी,
हिन्दी की शक्ति प्रबल देखी।
यह भारत माता की भाषा है,
इसकी उन्नति की अभिलाषा है।।

जब टंकण में हिन्दी होगी,
जब कण-कण में हिन्दी होगी।
हिन्दी में निज काम हमारे होंगे,
हिन्दी के तब पौ बारे होंगे।।

हिन्दी दिवस

रचना

शैल चौधरी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय परासी
द्वितीय म्योरपुर, सोनभद्र

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15.09.2022 दिन- गुरुवार

5173

कोयल रानी

कोयल रानी कैसी हो?
मीठी मिश्री जैसी हो।
मीठी तान सुनाती हो,
सबके मन को भाती हो।।

कोयल रानी कैसी हो?
मीठी मिश्री जैसी हो।
एक डाल से दूजी डाल,
बैठ-बैठ इतराती हो।।

कोयल रानी कैसी हो?
मीठी मिश्री जैसी हो।
कू-कू की आवाज से,
सबका मन हर्षाती हो।।

कोयल रानी कैसी हो?
मीठी मिश्री जैसी हो।
क्या रानी मक्खी का तुम,
सारा शहद पी जाती हो?

रचना- गीता रानी (स0अ0)
प्रा0 वि0 धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5174

दिनांक- 16/09/2022 दिन-शुक्रवार

हिन्दी दिवस

हमारी आन, बान, शान है हिन्दी,
तुलसी, मीरा का ज्ञान है हिन्दी।
बसे हैं जिसमें अनेक श्लोक,
हम सभी की पहचान है हिन्दी।।

हिन्दी हम सब की मातृभाषा है,
हिन्दुस्तानी के मन की आशा है।
हिन्दी है हमारी बड़ी अनमोल,
इसका नहीं जगत में कोई मोल।।

माता-पिता का दुलार है हिन्दी,
गुरुजनों का आधार है हिन्दी।
सभी रिश्ते देखो समाये इसमें,
हमारी संस्कृति, संस्कार है हिन्दी।।

हिन्दी का न सम्मान खोने पाये,
हिन्दी का हम अलख जगायें।
सभी भाषाओं से न्यारी है हिन्दी,
हिन्दी देश की, ये प्यारी है हिन्दी।।

रचना

रचना सिंह वानिया(स० अ०)
प्रा० वि० आलमपुर बुर्जुग
रजपुरा, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16.09.2022 दिन- शुक्रवार

5175

मेरी हिन्दी

हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति का सूत्रधार है,
अन्तर्बोध की प्रसन्नता को करती जो स्वीकार है।
शब्द-शब्द में छिपे हैं मन के सारे भाव,
मातृभाषा है मेरी हिन्दी, इससे मुझको प्यार है।।

जाने क्यों पर आज खतरे में है अस्तित्व?
हर किसी पर विदेशी भाषा का छाया खुमार है।
मत भूलो वे लोग तरसते हैं हमारी हिन्दी को,
क्योंकि हमारी हिन्दी में स्नेह है, प्रेम है, सत्कार है।।

गद्य भी है, पद्य भी है, दोहे भी हैं, छन्द भी हैं,
हमारी मातृभाषा हिन्दी भावनाओं का द्वार है।
आओ! मिलकर प्रण करें, आत्मसात करें हिन्दी को,
आपस में विदेशी भाषा का करना अब बहिष्कार है।।

रचना- पारुल चौधरी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 हरचन्दपुर
खेकड़ा, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16.09.2022 दिन- शुक्रवार

5176

छोटू...

छोटू एक नन्हा बच्चा है,
मन का बड़ा ही सच्चा है।
मीठी-मीठी उसकी बोली है,
जैसे जिह्वा मिश्री घोली है।।

चित्रकारी उसे लुभाती है,
किताबें मन को भाती हैं।
अक्षर-अक्षर वह चुनता है,
चित्र देख कहानी बुनता है।।

नयी ताज़गी भरी कहानी,
बातें होती उसकी ज़ुबानी।
होंठों पर सजती मुस्कान,
जिसमें बसती सबकी जान।।

रचना
स्वाती सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० रवांसी
परसेण्डी, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16-09-2022 दिन- शुक्रवार

5177

भालू आया

भालू आया, भालू आया,
सब बच्चों ने शोर मचाया।
भालू के संग है रामू मदारी,
दोनों की है गहरी यारी।।

रामू जब-जब डमरू बजाता,
भालू छम-छम नाच दिखाता।
रामू उसको खूब नचाता,
भालू फिर भी न इतराता।।

शाम को रामू जब घर जाता,
भालू को वह खूब नहलाता।
रामू उसको लाड़ लड़ाता,
वह रामू संग खाना खाता।।

दूध, मलाई, रबड़ी खाकर,
भालू आँगन में फिर जाता।
रामू उसको जब सहलाता,
गहरी नींद में वह सो जाता।।

रचना
पूनम सारस्वत (स०अ०)
एकीकृत विद्यालय रुपानगला
खैर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5178

दिनांक- 16.09.2022 दिन- शुक्रवार

हिन्दी भाषा को प्रणाम

हिन्दी भाषा तुझको प्रणाम,
तुझको प्रणाम, तुझको प्रणाम!
मातृ भाषा तुझको प्रणाम,
तुझको प्रणाम, तुझको प्रणाम!

पन्त, प्रसाद, निराला, दिनकर।
मैथिलीशरण, जायसी, पद्माकर।
रत्नाकर, भूषण और मतिराम,
तुझको प्रणाम, तुझको प्रणाम!

मीरा, तुलसी, सूर, कबीरा,
गूँथे माला मोती-हीरा।
केशव, रहीम, रसखान ललाम,
तुझको प्रणाम, तुझको प्रणाम!

छन्द, प्रबन्ध, पूर्ण रस भर,
अलङ्कार, गुण, भाव मधुर।
साहित्य शब्द शक्ति निकाम।
तुझको प्रणाम, तुझको प्रणाम!

रचना
उमेश चन्द्र वर्मा (प्रवक्ता)
रा० इ० कालेज निशातगंज
लखनऊ, उ०प्र०

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16/09/2022 दिन- शुक्रवार

5179

निपुण लक्ष्य (भाग-1)

आओ सब समझें, समझायें,
निपुण लक्ष्य को हम अपनायें।
जन-जन तक इसको पहुँचायें,
मिलकर इसको सफल बनायें।।

बालबाटिका में जब,
अपना बच्चा आये।
2 अक्षर के 5 शब्दों को।
हिन्दी में पढ़ जाए।।

10 तक की संख्याएँ,
गणित में वो पढ़ पायें।।
बालबाटिका को अपनी,
हम सब निपुण बनायें।।

रचना-
अंजू गुप्ता (प्र०अ०)
प्रा० वि० खम्हौरा- 1
महुआ, बाँदा

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16.09.2022 दिन- शुक्रवार

5180

हिन्दी मेरी पहचान

विविधताओं में भरे इस देश में,
लगी भाषाओं की फुलवारी है।
इनमें हमको सबसे प्यारी,
हिन्दी मातृभाषा हमारी है।।

वक्ताओं की ताकत है हिन्दी भाषा,
लेखक का अभिमान है हिन्दी भाषा।
भाषाओं के शीर्ष पर है बैठी,
मेरी प्यारी हिन्दी भाषा।।

हर कण में है हिन्दी बसी,
मेरी माँ की इसमें बोली बसी।
हम सब मिलकर दें सम्मान,
निज भाषा पर करें अभिमान।।

करते तन-मन से वन्दन,
जन-गण-मन की अभिलाषा का।
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का,
आराधना अपनी भाषा का।।

रचना
दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी,
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17.9.2022 दिन- शनिवार

5181

स्वच्छता...

स्वच्छता हम अपनाएँगे,
बीमारी को दूर भगाएँगे।
हम सब बच्चे मिलकर,
घर-घर सन्देश पहुँचाएँगे।।

स्वच्छता है बहुत जरूरी,
बीमारी से हो जाये दूरी।
रहे खुशहाल घर-परिवार,
हर उम्मीद हो जाये पूरी।।

गन्दा पानी जमने न दें,
खुले में शौच करने न दें।
अपने चारों ओर रखें साफ,
कूड़ा, खुले में फेंकने न दें।।

भारत को स्वच्छ बनाएँगे,
खुशहाली हम ले लाएँगे।
साफ-सफाई रखो आप-पास,
अच्छे नागरिक कहलाएँगे।।

रचना
भुवन प्रकाश (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17-09-2022 दिन-शनिवार

5182

बनो निपुण

पढ़-पढ़ बनो निपुण,
सीख-सीख बनो निपुण।
करो योग रहो निरोग,
योग कर-कर बनो निपुण।।

निपुण होए सब बेटी-बेटा,
दूर होए छाप-अँगूठा।
अँधेरा जब छट जाये,
तब क्यों न निपुणता आये?

निपुण बनो निपुण करो,
अँधेरे से अब न डरो।
नित नए आयाम गढ़ो,
निपुणता से आगे बढ़ो।।

निपुण कार्यक्रम आया है,
बचपन इसने महकाया है।
साक्षरता और गणित से,
संसार देखना सिखाया है।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी,
जवाँ, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17/09/2022 दिन- शनिवार

5183

गौरवमयी भाषा हिन्दी

भारत के मस्तक पर सजी,
हो जैसे लाल बिन्दी।
सभी भाषाओं से उज्जवल,
राजभाषा हमारी हिन्दी।।

इसका व्याकरण सबसे वृहद,
ग्यारह स्वर व इकत्तीस व्यंजन।
जिनसे शब्द व वाक्य बनते,
कथा, गीत, कहानी करती मन रंजन।।

बाईस भाषाओं को हमारे,
संविधान में मिली मान्यता।
अट्ठारह बोलियों में बोली जाती,
हिन्दी भाषा भावों की व्याख्याता।

संस्कृत जिसकी है जननी,
देवनागरी है इसकी लिपि।
अरबी, पुर्तगाली, उर्दू, फारसी से,
परिधि होती असीमित जिसकी।।

रचना-
ऋतु अग्रवाल (शिक्षिका)
रागिनी संगीतशाला,
ब्रह्मपुरी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17/09/2022 दिन- शनिवार

5184

मातृभाषा

'ह' से हिन्दी, 'ह' से हम,
बच्चों बोलो हम नहीं हैं कम।
हिन्दी की बिन्दी है शान,
मातृभाषा का रखना मान।।

सब भाषाओं का शिखर है,
वैज्ञानिक है, और प्रखर है।
मन भावों की, है अभिव्यक्ति,
हिन्दी में है, बड़ी ही शक्ति।।

शब्दकोश की प्रथम इकाई ,
हिन्दी ने ही हर बात समझाई।
लोरी भी देती, हिन्दी में सुनाई,
तभी तो मातृभाषा कहलायी।।

वर्ण, शब्द, वाक्यों का खजाना,
भाषाओं के बीच इसे पहचाना।
14 सितम्बर ने बात पुनः दोहरायी,
हिन्दी मातृभाषा, स्मरण रहे भाई।।

रचना :-
डॉ० आभा सिंह भैसोड़ा
(स०अ०)
रा० प्रा० वि०- देवलचौड़
ब्लॉक - हल्द्वानी, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17.09.2022 दिन- शनिवार

5185

बालश्रम

बच्चों का मन्दिर होता स्कूल,
वही तो होते प्रगति का मूल।
आओ उनका आज सँवारें,
जीवन बनाएँ हम अनुकूल।।

बालश्रम है एक अभिशाप,
मत करवाओ उनसे काम।
फूल सा मन नहीं मुरझाये,
आओ मिलकर इसे मिटाएँ।।

बालश्रम सामाजिक समस्या,
बाल मजदूरी का अन्त कराएँ।
परिवार को जागरूक करके,
बच्चों के अधिकार समझाएँ।।

ये बचपन से हो जाते वंचित,
आओ करें हम इनको चिन्हित।
बालवाड़ी एवं आँगनबाड़ी में,
भेजने को इन्हें हम करें प्रेरित।।

रचना- पूनम नैन (स0 अ0)
उ0 प्रा0 वि0 मुकंदपुर
छपरौली, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 19.09.2022 दिन- सोमवार

5186

हमारी हिन्दी भाषा

तेरी मेरी जन-जन की बोली,
सरल-सहज लगती है भोली।
कितनी मधुर, कितनी सुरीली!
सब रसों से बनी हिन्दी रसीली।।

अनेक भाषाओं में घुली-मिली,
हिन्दी मेरी मिश्री सी मीठी।
सब भाषाओं से सजती ऐसे,
सुन्दर फूलों का गुलदस्ता हो जैसे।।

हिन्दी देश का गौरव और सम्मान,
रखती सभ्यता-संस्कृति, एकता का मान।
भक्त कवियों के पदों की जान,
छायावादी कवियों की कृतियों की खान।।

हिन्दी है हमारे साहित्य की जान,
हमारी धरोहर, हमारे देश की शान।
दुल्हन का श्रृंगार सँवारती जैसे बिन्दी,
हमारे साहित्य को रचाती-बसाती वैसे हिन्दी।।

रचना–
डॉ० विनीता खाती (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० स्कूल गाड़ी
ताड़ीखेत, अल्मोड़ा

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 19/09/2022 दिन-सोमवार

5187

यात्रा सूरज की

धीरे-धीरे सूरज उगता,
पूरब वाली खिड़की से।
आँखे मलते बच्चे जगते,
मीठी-मीठी झिड़की से।।

धीरे-धीरे ताप बढ़ता,
खिलती कलियाँ लाली से।
सारा जग हर्षित हो जाता,
चिड़ियों की किलकारी से।।

धूप भी थकने लगती फिर,
बढ़ा ताप कम होने से।
पक्षी भी घर आने लगते,
समय शाम का होने से।।

आगे बढ़कर सूरज ढलता,
पश्चिम वाली खिड़की से।
माँ की गोदी में सो जाता,
थक कर अपनी यात्रा से।।

रचना रानी शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8), नारंगपुर
वि० ख०- परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 19-09-2022 दिन- सोमवार

5188

वर्णमाला गीत (भाग-1)

'अ' से अजगर, 'आ' से आग,
मिलकर गाओ मल्हार राग।
'इ' से इनाम, 'ई' से ईंट,
ना कर आपस में मारपीट।।

'उ' से उबटन, 'ऊ' से ऊँट,
खाना खा ले अब ना रूठ।
'ऋ' से ऋषि हमें देते ज्ञान,
उनकी लो तुम बातें मान।।

'ए' से एक, 'ऐ' से ऐनक,
मिलकर करते हैं मेहनत।
'ओ' से ओम, 'औ' से औजार,
आपस में सब करो प्यार।।

'अं' से अंगूर, 'अः' है खाली,
आओ मिलकर बजाएँ ताली।
'क' से कागज, 'ख' से खत,
मीना, राजू को सता मत।।

रचना
ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना,
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5189

दिनांक-19.9.2022 दिन- सोमवार

पर्यायवाची कविता

भाग-01

हे भानु! भाष्कर, दिनकर,
रवि, सूरज और दिवाकर,
नित प्रभात, प्रातः,भोर,
सुबह- सबेरे आकर।।

मग, पथ, राह, मार्ग,
पन्थी को दिखलाकर।
जग, भव, संसार और,
विश्व को तेजोमय कर।।

रजनी, निशा, विभा,
रात, रात्रि में छिपकर।
चन्दा, मयंक, शशि या,
इन्दु या चन्द्रिका भरकर।।

सिन्धु, जलधि, जलनिधि,
या सागर में है जल।
उड़-उड़ नीरद, जलधर,
हैं मेघ घनेरे बादल।।

रचना
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
प्रा० वि० अकबापुर
पहला, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5190

दिनांक- 19/09/2022 दिन- सोमवार

'दो का पहाड़ा'

दो गुणा एक, दो एकम दो, दो गुणा दो, दो दूनी चार।
दो को यदि दो बार जोड़ो, तो भी होंगे चार।।

दो गुणा तीन होते दो तिया छः,
दो को तीन बार जोड़ो, तो भी होते छः।
दो गुणा चार होते दो चौक आठ,
दो को चार बार जोड़ो हो जायेंगे आठ।।

दो गुणा पाँच होते दो पञ्जे दस,
दो को पाँच बार जोड़ो हो जायेंगे दस।
दो गुणा छः होते दो छक्के बारह,
दो को छः बार जोड़ो हो जाते हैं बारह।।

दो गुणा सात होते दो सत्ते चौदह,
दो को सात बार जोड़ो हो जायेंगे चौदह।
दो गुणा आठ होते दो अठ्ठे सोलह,
दो को आठ बार जोड़ो हो जायेंगे सोलह।।

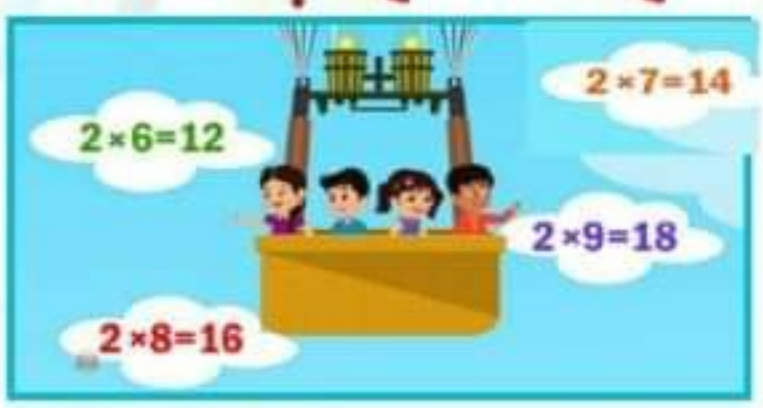

दो गुणा नौ होते दो निम अठ्ठारह,
दो को नौ बार जोड़ो हो जायेंगे अठ्ठारह।
दो गुणा दस होते दो दहाई बीस,
दो को दस बार जोड़ो तो भी होतो बीस।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
वि० ख० व जिला- मथुरा

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 19-09-2022 दिन- सोमवार

5191

विश्वकर्मा जयन्ती

हिन्दू धर्म में विश्वकर्मा जयन्ती पर,
इनकी पूजा का होता है अति महत्व।
ये सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के थे सातवें पुत्र,
सृष्टि में जनहित से था इन्हें ममत्व।।

इसीलिए सृजित की इन्होंने,
नयी-नयी आकृतियाँ और ढाँचे।
थे शिल्पकार, वास्तुकार, इंजीनियर,
अद्भुत थी अनकी प्रतिभा व साँचे।।

सृष्टि को सजारा, सँवारा और,
निर्माण, सृजन में कर अन्वेषण।
नये-नये ढंग और सोच थी नयी,
सृजन में जीवन है, इन्हीं का अर्पण।।

कारखानों, औघोगिक संस्थाओं में,
होती है पूजा सत्रह सितम्बर को।
पूजते सभी सृजनकर्ता इन्हें,
माँगते हैं आशीष, देख अम्बर को।।

रचना-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा०वि०- बम्हौरी,
मऊरानीपुर झाँसी

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5192

दिनांक- 20.09.2022 दिन- मंगलवार

बादल काले...

बादल काले, बड़े निराले,
बच्चे जैसे भोले-भाले।
बारिश की बूँदें ले आते,
फसलों को जीवन दे जाते।।

बादल, मेघ, जलद कहलाते,
घूम-घूमकर जल बरसाते।
लाल, गुलाबी, भूरे, काले,
कई रंगों में खूब सुहाते।।

पेड़ों से ही आती बरखा,
बरखा से ही पेड़ हैं उगते।
पेड़ लगाओ, धरा बचाओ,
पूर्वज यही हमारे कहते।।

टिप-टिप गिरती जल की बूँदें,
बहती बनकर हैं जलधारा।
सूखी धरती का उर सींचें,
हरा-भरा करती जग सारा।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि०- स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

5193

दिनांक-20/09/2022 दिन- मंगलवार

प्यारी हिन्दी

सबकी अपनी-अपनी बोली,
सबकी अपनी भाषा।
मेरे दिल में बसी है हिन्दी,
जो है हमारी राजभाषा।।

पहला अक्षर मुख से निकले,
होता है वह हिन्दी।
मन के भावों को सब तक,
पहुँचाए वो है हिन्दी।।

सीधी-सादी, सरल सी,
भाषा है हमारी हिन्दी।
हमारी विरासत को संजोती,
आयी हमारी हिन्दी।।

हिन्दी से यह नाता हमारा,
एक दिन में नहीं सिमट सकता।
माँ-बच्चे का यह रिश्ता,
कभी नही दरक सकता।।

रचना-

भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5194

दिनांक- 20-09-2022 दिन- मंगलवार

प्रोजेक्ट चीता

एक समय था जब चीते,
जंगल में घूमा करते थे।
1952 में विलुप्त हुए,
जो शान से विचरण करते थे।।

सत्रह सितम्बर बाईस को,
तस्वीर यहाँ की बदल गई।
चीता का हुआ सस्नेह आगमन,
भारत की तकदीर पलट गई।।

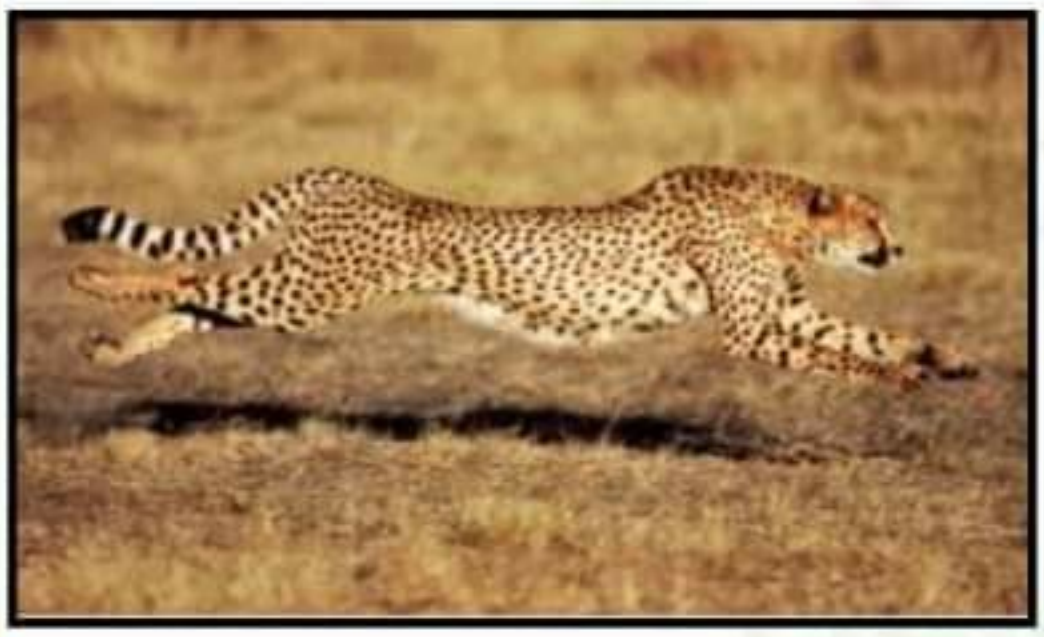

नामीबिया ने दिए हैं चीते,
भारत को उपहार में।
जिन्हें बसाया गया हरे-भरे,
कूनो नेशनल पार्क में।।

संरक्षण कर भारत में उनका,
पुनर्वास कराया जाएगा।
जो दशकों पहले विलुप्त हुए,
उनका दीदार कराया जाएगा।।

रचना-
नीतू सिंह (प्र० अ०)
प्रा०वि० समोखर
निधौलीकलां, एटा

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20.09.2022 दिन- मंगलवार

5195

साक्षर

चला रहे हैं विशेष अभियान,
कर लो आओ अक्षर ज्ञान।
अनपढ़ की नहीं कोई पहचान,
पढ़ा-लिखा है देश की शान।।

पढ़-लिख जाये हर इंसान,
तभी बनेगा देश महान।
आओ हम सब संकल्प उठाएँ,
हर नागरिक को साक्षर बनाएँ।।

बच्चे, बूढ़े और जवान,
सबको लिखना आये नाम।
अब कोई अंगूठा ना लगाये,
हर जगह कलम चलाये।।

अपना हक पाना है तुमको,
सबको साक्षर होना होगा।
आगे-आगे चलोगे तुम सब,
पीछे सारा जमाना होगा।।

रचना- सीमा शर्मा (स0अ0)
प्रा0 वि0 निवाड़ा
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5196

दिनांक- 20/09/2022 दिन- मंगलवार

निपुण बालक

काले रंग के बोर्ड को देखो,
इसपे लिखते गुरु को देखो।
निपुण के लक्ष्य हासिल करके,
निपुण बनते बालक को देखो।।

अक्षर, ध्वनियाँ और वाक्य से,
अंक, संख्या, जोड़-घटाव से।
गुणा, भाग को सीखते देखो,
निपुण बनते बालक को देखो।।

पढ़ कर देखो ये बालक,
जीवन में निपुण बन जाएगा।
पहुँचेगा देखो वहाँ ये बालक,
मंजिल अपनी पा जाएगा।।

देश का मान बढ़ाएगा,
हमारी शान बढ़ाएगा।
निपुण बालक से एक दिन,
निपुण नागरिक बन जाएगा।।

रचना -
पवन भारती (स०अ०)
प्रा० वि० बसेला
दातागंज (बदायूँ)

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20-09-2022 दिन-मंगलवार

5197

तुम्हें बुलाता है स्कूल

टन-टन-टन बजती है घण्टी,
आओ चुन्नू, मुन्नू और बन्टी।
बुलाता है तुमको स्कूल,
न आने की करो न भूल।।

आओ आकर करें प्रभु ध्यान,
फिर गाएँगे समूह में गान।
आ करके ये लो तुम जान,
पढ़-लिखकर ही मिलेगा मान।।

थोड़ी सी शैतानी होगी,
थोड़ी होगी नादानी।
फिर तुमको पढ़ना भी होगा,
नहीं चलेगी मनमानी।।

सुनो कहानी, पढ़ो कविता,
हंसी खुशी दिन ऐसे बीता।
फिर मिलेगा घर का काम,
घर जाकर होगा आराम।।

रचना
रजनी सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० नगलिया सोफ़ा
खैर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20/09/2022 दिन- मंगलवार

5198

नन्हें-मुन्ने

हम बच्चे हैं नन्हे-मुन्ने,
प्यारे-प्यारे, न्यारे-न्यारे।
राग-द्वेष न हमको आता,
कपट-कलेश न हमको भाता।।

ईश्वर की मूरत कहलाते,
सब हमको गले लगाते।
प्रेम से बढ़कर कुछ नहीं,
सबको हम यही सिखलाते।।

छोटी-मोटी बातों को,
न कभी ह्रदय से लगाते।
हो जाए चाहे जितना झगड़ा,
सब भूल फिर से मुस्काते।।

खेल-खेल में देते सन्देश,
भाईचारा प्यारा देश।
तभी बचेगा, तभी बचेगा,
जब सब होंगे, न्यारे-न्यारे।।

रचना-
मनीष त्रिवेदी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय हमीरपुर
रसूलाबाद, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21.09.2022 दिन- बुधवार

5199

पढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ

बादल से ये छनकर बूँदें,
ज्यों धरती पर गिरती हैं।
सुबह-सुबह मम्मी की पायल,
आँगन में ज्यों बजती है।।

सर-सर-सर-सर हवा के झोंके,
मुझसे आकर कहते हैं।
पढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ,
मंजिल पाकर रुकते हैं।।

बीच-बीच में सूरज की,
किरणें सन्देशा देती हैं।
देख अन्धेरा कभी न डरना,
यही हमेशा कहती हैं।।

रचना
कमला देवी (शिक्षामित्र)
प्रा० वि० खरवलिया
सिधौली, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5200

दिनांक- 21/09/2022 दिन- बुधवार

बन्दर जी की चली बारात

बन्दर जी की चली बारात,
धूम-धड़ाके से सब नाचे साथ।
भालू-शेर जम के नाचे,
चन्दा ने चमकायी रात।।

काले भालू ने ढोल बजाया,
मधुर गीत गधे ने गाया।
मोर-पपीहा मिलकर नाचे,
ऊँट-घोड़ी ने नाच दिखाया।।

हाथी, जिराफ, गीदड़, सियार,
सब बारात में आये।
खा-पी कर दावत सबने,
बहुत मजे उड़ाये।।

बन्दरिया बन दुल्हनिया,
बन्दर के सँग आयी।
सारा जंगल खुशियों से झूमा
मिल सब ने दी बधाई।।

प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि०- सिसौला खुर्द
जानी, मेरठ